मास - मई, 2020

मोड्यूल - 1 (भाग - 1) MODULE – 1 (PART- 1)

कक्षा - आठवीं

विषय - हिंदी (द्वितीय भाषा)

पाठ - तलाश (भारत की खोज)

रमेश चंद

प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय - 1, मुंबई

'भारत की खोज' देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल द्वारा रचित पुस्तक 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' का हिंदी अनुवाद है |

तलाश

- भारत के अतीत की झाँकी
- भारत की शक्ति और सीमा
- भारत की तलाश
- भारत माता
- भारत की विविधता और एकता
- जन संस्कृति

भारत की खोज का दूसरा पाठ है - 'तलाश' | इस पाठ में छह उपशीर्षक हैं | इस पाठ के दो मोड्यूल बनाए गए हैं | मोड्यूल भाग एक में तलाश पाठ के तीन उपशीर्षक लिए गए हैं और शेष तीन उपशीर्षक मोड्यूल भाग दो में लिए गए हैं |

भारत के अतीत की झाँकी

नेहरू जी भारत के अतीत के बारे में सोचते हैं कि मेरे के समय के भारत में अवश्य ही ऐसी दृढ़ता रही है कि उसका अस्तित्व कभी डगमगाया नहीं है | यदि हम पिछले पाँच हजार वर्षों का विश्लेषण करें तो पाएँगे कि जो भारत में है उसका मुकाबला पूरा विश्व नहीं कर सकता | भारत की अमरता को देखकर नेहरू जी के मन में ये विचार उठे कि

आखिर यह भारत है क्या? अतीत में यह किस विशेषता का प्रतिनिधित्व करता था ? उसने अपनी प्राचीन शक्ति को कैसे खो दिया है? क्या उसने इस शक्ति को पूरी तरह खो दिया है? विशाल जनसंख्या का बसेरा होने के अलावा क्या आज उसके पास ऐसा कुछ बचा है जिसे जानदार कहा जा सके? आधुनिक विश्व से उसका तालमेल किस प्रकार बैठता है ? इतने विचार मन में होने पर भी नेहरू जी एक आलोचक की भाँति भारत के अतीत का विश्लेषण कर यह जानना चाहते थे कि भारत की मजबूती का कारण है क्या? वे अतीत के पसंद व नापसंद दोनों पक्षों का अवलोकन करना चाहते थे| उन्होंने भारत के अतीत को जानने के लिए देश का निरीक्षण किया | उन्होंने सबसे पहले भारत के उत्तर-पश्चिम में स्थित सिंधु घाटी में मोहनजोदड़ो के प्राचीन नगर के घर और गलियों को देखा जिसका समय पाँच हजार वर्ष पहले बताया जाता है | वहाँ एक प्राचीन और पूर्णतः विकसित सभ्यता थी | इनके स्थायी रूप से टिके रहने का कारण ठेठ भारतीयपन है और यही आधुनिक सभ्यता का आधार है |

उन्होंने कहा कि यह विचार अवश्य आश्चर्य चकित करता है कि इतने परिवर्तन और विकासमान रहकर भी कोई संस्कृति या सभ्यता पाँच - छह हजार वर्ष या इससे भी अधिक समय तक निरंतर बनी रहे| फ्रांस, चीन ,मिस्र , ग्रीस ,अरब और भू-मध्य सागर के लोगों से उसका बराबर निकट संपर्क रहा है | यद्यपि भारत ने उन्हें भी प्रभावित किया और स्वयं भी उनसे प्रभावित हुआ फिर भी उसका सांस्कृतिक आधार इतना मजबूत था कि वह हिला नहीं |

अब नेहरू जी के मन में सवाल उठा कि इस मजबूती का रहस्य क्या है ? इसका पता लगाने के लिए उन्होंने भारत का इतिहास और उसके विशाल प्राचीन साहित्य के कुछ अंशों को पढ़ा जो विद्वान यात्री चीन,पश्चिम व मध्य एशिया से आए थे और उन्होंने वह साहित्य लिखा था | नेहरू जी ने हिमालय पर्वत और उनसे जुड़े पुराने मिथकों और दंतकथाओं को जाना | जिन्होंने विचारों और साहित्य को बहुत दूर तक प्रभावित किया | पहाड़ों के प्रति मेरे प्रेम ने और कश्मीर के साथ मेरे खून के रिश्ते ने मुझे उनकी ओर विशेष रूप से आकर्षित किया | हिमालय पर्वत की गोद से निकलने वाली सिंधु , ब्रह्मपुत्र , यमुना और गंगा नदियों ने उन्हें प्रभावित किया| इंडस और सिंधु नदी के आधार पर भारत का नाम इंडिया और हिन्दुस्तान पड़ा | भारत के अतीत की कहानी को स्परूप देने वाली अजंता ,एलोरा ,ऐलिफेंटा की गुफाओं , आगरा और दिल्ली में बनी खूबसूरत इमारतों को भी देखा, जहाँ का प्रत्येक पत्थर भारत के अतीत की कहानी कह रहा था |

उन्होंने कहा कि जब भी अपने शहर इलाहाबाद या हरिद्वार में महान स्नान-पर्व कुंभ के मेले को देखता हूँ तो मुझे याद आता है , सैकड़ों - हजारों की संख्या में लोग आते हुए | गंगा स्नान - पर्व विषय पर विदेशियों ने भी लिखा है | मुझे हैरत होती है कि वह कौन-सी प्रबल आस्था थी जो हमारे लोगों को भी अनगिनत पीढ़ियों से भारत की इस प्रसिद्ध नदी की ओर खींचती रही है |

नेहरू जी कहते हैं कि इन यात्राओं और दौरों ने मिलकर मुझे अतीत में देखने की अंतर्दृष्टि दी | मेरे मन में भारत की जो तसवीर थी उसमें धीरे-धीरे सच्चाई का बोध घर करने लगा | बनारस के पास सारनाथ में गोतम बुद्ध को पहला उपदेश देते साफ देखा | अशोक के पाषण स्तंभ व शिलालेख अशोक की महानता प्रकट करते हैं |

इस प्रकार नेहरू जी को पाँच हजार साल पुरानी अतीत की झाँकी साफ,स्पष्ट और वर्तमान के धरातल पर सजीव प्रतीत होती है | 'भारत के अतीत की झाँकी' का अवलोकन कर नेहरू जी इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति का महत्त्व सदा बना रहेगा |

भारत की शक्ति और सीमा

भारत के अतीत का अवलोकन करने के बाद नेहरू जी का ध्यान भारत की शक्ति की ओर गया | उन्होंने कहा कि भारत की शक्ति के स्रोतों और उसके पतन के कारणों की खोज लंबी और उलझी हुई है | भारत की शक्ति के स्रोतों के पतन के अनेक कारण हैं | भारत तकनीक की दौड़ में पिछड गया और यूरोप तकनीकी की प्रगति के मामले आगे निकल गया | इस तकनीकी विकास के पीछे विज्ञान की चेतना थी | तकनीकी विकास के आधार पर ही उन्होंने सैन्यबल बढ़ाकर पूरब पर अधिकार कर लिया | भारतीयों में मानसिक सजगता तकनीकी कौशल की कमी हो रही थी | लोगों में आगे बढ़ने की लालसा व परिश्रम करने की चाह कम हो रही थी | नित्य नए आविष्कार करने वाला भारत दूसरों का अनुकरण करने लगा | प्रकृति व ब्रह्मांड भेदने वाला भारत कार्यों में कमजोर पड़कर साहित्य रचना करने लग गया | काव्य और साहित्य की भाषा अलंकारों से परिपूर्ण जटिल हो गई |

इस काल में भारत नवीन खोजों की बजाय अंधविश्वासों व संकीर्ण रूढिवादिता में फँस गया | वह गतिहीनता और जड़ता की ओर बढ़ने लगा | महासागरों को पार न करना और मूर्ति पूजा का प्रभाव बढ़ जाना | यह देखकर भी नेहरू जी का

भारत की शक्ति के प्रति विश्वास अडिग रहा | अभी तक भी भारत की दृढ़ता और मजबूती बनी रही है | देश आगे बढ़ रहा है |

भारत की तलाश

नेहरू जी कहते हैं कि पुस्तकों , प्राचीन स्मारकों और विगत सांस्कृतिक उपलब्धियों से मुझ में एक हद तक भारत समझ तो पैदा हुई लेकिन मुझे उससे संतोष नहीं हुआ और नं ही वह उत्तर मिला जिसकी मैं तलाश कर रहा था |उस समय भारत में गरीब, मध्यम वर्ग और धनी वर्ग था | धनी वर्ग के लोग तो अंग्रेजों के समर्थक ही से लगते थे | उन्हें देश की कोई परवाह नहीं थी | गरीब किसान वर्ग अपनी आजीविका में व्यस्त था मध्यम वर्ग अंग्रेजों की जंजीरों में जकड़ा हुआ था|वही देश को आजाद कराने की सोच रहा था |नेहरूजी का ध्यान ग्रामीण जनता की ओर गया | भारत का युवा बुद्धि जीवी गाँवों में निवास करता था | भारत की ग्रामीण जनता नेहरू जी को सदा अपनी ओर आकर्षित करती रही | ग्रामीण अभावों में रहते हुए भी भारत की शान थे | गाँवों ने भारत की प्राचीन सांस्कृतिक परम्परा को कुछ अंशों में अब भी बचाकर रखा है | अतः भारत की असली झलक गाँवों में ही मिलती है |